मधुबन ओम् शान्ति अंक 393 अप्रैल 2025

पत्र-पुष्प

"सदा सफलतामूर्त बनने के लिए कम्बाइण्ड स्वरूप की स्मृति में रहो"

(दादी जी – 20-03-2025)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा बाप और आप, इसी कम्बाइन्ड स्वरूप में रहने वाली कर्मयोगी आत्मायें, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण बाबा के विजयी बच्चे,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ने मार्च महीने में होली का पावन पर्व खूब धूमधाम से मनाया होगा। इस बार लगातार 2-3 अव्यक्त मुरलियां होली के निमित्त हम सबने सुनी, जिसमें प्यारे बापदादा ने होली के अनेकानेक आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट किये और यही शिक्षा दी कि अब बीती को बीती कर, एक बाप के होकर रहो, होली बनो और बनाओ। जब नया संसार, नई स्वर्णिम दुनिया आने वाली है तो पुराने संस्कारों का अन्तिम संस्कार करो। मन्सा द्वारा प्रकृति को सतोगुणी बनाने की सेवा करो, सर्व के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रख संस्कार मिलन की रास करो, सदा परमात्म संग के रंग में रह सबको वही रंग लगाते सच्ची होली मनाओ। तो जरूर आप सभी ने ऐसी सच्ची होली मनाई होगी। साथ-साथ हम सबकी अति स्नेही गुल्जार दादी और दादी जानकी जी का स्मृति दिवस भी मार्च के महीने में होता, सभी उनकी दिव्य पालना को, उनके द्वारा मिली हुई मधुर शिक्षाओं को याद करते अपने स्नेह सुमन अर्पित करते हैं।

अभी अप्रैल मास के लिए प्यारे बापदादा का विशेष इशारा है बच्चे, सेवाओं में सदा सफलतामूर्त बनने वा माया पर विजय प्राप्त करने के लिए अपना कम्बाइन्ड स्वरूप स्मृति में रखो। जैसे शरीर और आत्मा कम्बाइन्ड है, ऐसे आप, बाप के साथ सदा कम्बाइन्ड रहो। हर कर्म करते हुए योग को कम्बाइन्ड रखो, ज्ञान स्वरूप के साथ स्नेह को कम्बाइन्ड रखो। बाप को कम्पेनियन तो बनाया है अब उसे कम्बाइण्ड रूप में अनुभव करो। जितना कम्बाइण्ड-रूप का अनुभव बढ़ाते जायेंगे उतना ब्राह्मण जीवन बहुत प्यारी, मनोरंजक अनुभव होगी। लोग तो कहते हैं जिधर देखते हैं उधर तू ही तू है और हम कहते कि हम जो करते हैं, जहाँ जाते हैं, बाप साथ ही है अर्थात् तू ही तू है। जैसे कर्तव्य साथ है, ऐसे हर कर्तव्य कराने वाला भी सदा साथ है। करनहार और करावनहार दोनों कम्बाइण्ड हैं। जब सर्वशक्तिमान् बाप कम्बाइण्ड है, तो सर्व शक्तियां स्वत: आ जायेंगी, जहाँ सर्व शक्तियां हैं वहाँ सफलता न हो, यह असम्भव है। यदि चलते-चलते कभी असफलता या मुश्किल का अनुभव होता है तो उसका कारण खुदा को खिदमत (सेवा) से अलग कर देते हो। खुदाई-खिदमतगार हैं, यही कम्बाइन्ड स्वरूप की स्मृति असम्भव को भी सम्भव कर देगी। इतनी सहज विधियां मीठे बापदादा ने हम बच्चों को सुनाई हैं, इन्हें सिर्फ स्मृति में रखते हुए उसका स्वरूप बनना है। सहज मार्ग को कभी सहन करने का मार्ग नहीं बनाना है।

बाकी प्यारे बापदादा ने इस अव्यक्ति मिलन की सीजन के 10 टर्न में अव्यक्त वतन वासी होते भी सभी बच्चों को अपनी अलौकिक दृष्टि से, दिव्य शिक्षाओं व वरदानों से खूब सजाया। देश विदेश के हजारों बाबा के बच्चे मधुबन घर में आये, ज्ञान योग की क्लासेज़ के साथ-साथ आपस में रूहानी मिलन मनाया, एक दो के अनुभवों से स्वयं को भरपूर किया। अभी तो पूरे वर्ष के लिए सेवा और स्व-उन्नति निमित्त मीटिंग है, जिसका समाचार आपको मिल ही जायेगा। अच्छा - सभी को याद....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

1) शिव शक्ति का अर्थ ही है कम्बाइण्ड। बाप और आप - दोनों को मिलाकर कहते हैं शिवशक्ति। तो जो कम्बाइन्ड है, उसे कोई अलग नहीं कर सकता। यही याद रखो कि हम कम्बाइण्ड रहने के अधिकारी बन गये। पहले ढूँढने वाले थे और अभी साथ रहने वाले हैं - यह नशा सदा रहे।

2) जैसे ज्ञान स्वरूप हो ऐसे स्नेह स्वरूप बनो, ज्ञान और स्नेह दोनों कम्बाइन्ड हो क्योंकि ज्ञान बीज है, स्नेह पानी है। अगर बीज को पानी नहीं मिलेगा तो फल नहीं देगा। ज्ञान के साथ दिल का स्नेह है तो प्राप्ति का फल मिलेगा।

3) सदा हर कर्म करते हुए अपने को कर्मयोगी आत्मा अनुभव करो। कोई भी कर्म करते हुए याद भूल नहीं सकती। कर्म और योग - दोनों कम्बाइन्ड हो जाएं। जैसे कोई जुड़ी हुई चीज़ को अलग नहीं कर सकता, ऐसे कर्मयोगी बनो।

4) जैसे शरीर और आत्मा कम्बाइन्ड है तो जीवन है। यदि आत्मा शरीर से अलग हो जाए तो जीवन समाप्त हो जाता। ऐसे कर्मयोगी जीवन अर्थात् कर्म योग के बिना नहीं, योग कर्म के बिना नहीं। सदा कम्बाइन्ड हो तो सफलता मिलती रहेगी।

5) ''बाबा और हम'' – कम्बाइण्ड हैं, करावनहार बाबा और करने के निमित्त मैं आत्मा हूँ - इसको कहते हैं असोच अर्थात् एक की याद। शुभचिंतन में रहने वाले को कभी चिंता नहीं होती। जैसे बाप और आप कम्बाइण्ड हो, शरीर और आत्मा कम्बाइण्ड है, आपका भविष्य विष्णु स्वरूप कम्बाइण्ड है, ऐसे स्व-सेवा और सर्व की सेवा कम्बाइण्ड हो तब मेहनत कम सफलता ज्यादा मिलेगी।

6) कम्बाइण्ड सेवा के बिना सफलता असम्भव है। ऐसा नहीं कि जाओ सेवा करने और लौटो तो कहो माया आ गई, मूड ऑफ हो गया, डिस्टर्ब हो गये इसलिए अन्डरलाइन करो - सेवा में सफलता या सेवा में वृद्धि का साधन है स्व की सेवा और सर्व की कम्बाइण्ड सेवा।

7) सेवा और स्थिति, बाप और आप, यह कम्बाइन्ड स्थिति, कम्बाइन्ड सेवा करो तो सदा फरिश्ते स्वरूप का अनुभव करेंगे। सदा बाप के साथ भी हैं और साथी भी हैं - यह डबल अनुभव हो। स्व की लगन में सदा साथ का अनुभव करो और सेवा में सदा साथी का अनुभव करो।

8) जैसे ब्रह्मा बाप को देखा कि बाप के साथ स्वयं को सदा कम्बाइण्ड रूप में अनुभव किया और कराया। इस कम्बाइण्ड स्वरूप को कोई अलग कर नहीं सकता। ऐसे सपूत बच्चे सदा अपने को बाप के साथ कम्बाइण्ड अनुभव करते हैं। कोई ताकत नहीं जो उन्हें अलग कर सके।

9) बाप को कम्पेनियन तो बनाया है अब उसे कम्बाइण्ड रूप में अनुभव करो और इस अनुभव को बार-बार स्मृति में लाते-लाते स्मृति-स्वरूप बन जाओ। बार-बार चेक करो कि कम्बाइण्ड हूँ, किनारा तो नहीं कर लिया? जितना कम्बाइण्ड-रूप का अनुभव बढ़ाते जायेंगे उतना ब्राह्मण जीवन बहुत प्यारी, मनोरंजक अनुभव होगी।

10) बाप कम्बाइण्ड है इसलिए उमंग-उत्साह से बढ़ते चलो। कमजोरी, दिलशिकस्तपन बाप के हवाले कर दो, अपने पास नहीं रखो। अपने पास सिर्फ उमंग-उत्साह रखो। सदा उमंग-उत्साह में नाचते रहो, गाते रहो और ब्रह्मा भोजन करते रहो।

11) सदा स्मृति रखो कि कम्बाइण्ड थे, कम्बाइण्ड हैं और कम्बाइण्ड रहेंगे। कोई की ताकत नहीं जो अनेक बार के कम्बाइण्ड स्वरूप को अलग कर सके। प्यार की निशानी है कम्बाइण्ड रहना। यह आत्मा और परमात्मा का साथ है। परमात्मा तो कहाँ भी साथ निभाता है और हर एक से कम्बाइण्ड रूप से प्रीत की रीति निभाने वाला है।

12) जितनी शक्तियों की शक्ति है उतनी ही पाण्डवों की भी विशाल शक्ति है इसलिए चतुर्भुज रूप दिखाया है। शक्तियां और पाण्डव इन दोनों के कम्बाइन्ड रूप से ही विश्व सेवा के कार्य में सफलता प्राप्त होती है इसलिए सदा एक दो के सहयोगी बनकर रहो। जिम्मेवारी का ताज सदा पड़ा रहे।

13) जैसे इस समय आत्मा और शरीर कम्बाइण्ड है, ऐसे बाप और आप कम्बाइन्ड रहो। सिर्फ़ यह याद रखो कि 'मेरा बाबा'। अपने मस्तक पर सदा साथ का तिलक लगाओ। जो सुहाग होता है, साथ होता है वह कभी भूलता नहीं। तो साथी को सदा साथ रखो। अगर साथ रहेंगे तो साथ चलेंगे। साथ रहना है, साथ चलना है, हर सेकेण्ड, हर संकल्प में साथ है ही।

14) लोग कहते हैं जिधर देखते हैं उधर तू ही तू है और हम कहते कि हम जो करते हैं, जहाँ जाते हैं बाप साथ ही है अर्थात् तू ही तू है। जैसे कर्तव्य साथ है, ऐसे हर कर्तव्य कराने वाला भी सदा साथ है। करनहार और करावनहार दोनों कम्बाइण्ड हैं।

15) जिसके साथ स्वयं सर्वशक्तिमान् बाप कम्बाइण्ड है, सर्व शक्तियां स्वत: उनके साथ होंगी। जहाँ सर्व शक्तियां हैं वहाँ सफलता न हो, यह असम्भव है। कोई अच्छा साथी लौकिक में भी मिल जाता है तो उसको छोड़ नहीं सकते। ये तो अविनाशी साथी है। कभी धोखा देने वाला साथी नहीं है। सदा ही साथ निभाने वाला साथी है, तो सदा साथ-साथ रहो।

16) कभी कोई कार्य में या सेवा में जब अकेले अनुभव करते हो तब थक जाते हो। फिर दो भुजा वालों को साथी बना लेते हो, हजार भुजा वाले को भूल जाते हो। जब हजार भुजा वाला अपना परमधाम घर छोड़कर आपको साथ देने के लिए आया है तो उसे अपने साथ कम्बाइण्ड क्यों नहीं रखते! सदा बुद्धि से कम्बाइण्ड रहो तो सहयोग मिलता रहेगा।

17) संगमयुग पर ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी अकेले नहीं हो सकते। सिर्फ बाप के साथ का अनुभव, कम्बाइण्ड पन का अनुभव इमर्ज करो। ऐसे नहीं कि बाप तो है ही मेरा, साथ है ही। नहीं, साथ का प्रैक्टिकल अनुभव इमर्ज हो। तो यह माया का वार, वार नहीं होगा, माया हार खा लेगी। सिर्फ घबराओ नहीं, क्या हो गया! हिम्मत रखो, बाप के साथ को स्मृति में रखो तो विजय आपका जन्म सिद्ध अधिकार है।

18) सदा यही स्मृति रहे कि मैं रूह उस सुप्रीम रूह के साथ कम्बाइन्ड हूँ। सुप्रीम रूह मुझ रूह के बिना रह नहीं सकते और मैं भी सुप्रीम रूह के बिना अलग नहीं हो सकता। ऐसे हर सेकेण्ड हजूर को हाजिर अनुभव करने से रूहानी खुशबू में अविनाशी और एकरस रहेंगे।

19) मुझ रूह का करावनहार वह सुप्रीम रूह है। करावनहार के आधार पर मैं निमित्त करने वाला हूँ। मैं करनहार वह करावनहार है। वह चला रहा है, मैं चल रहा हूँ। हर डायरेक्शन पर मुझ रूह के लिए संकल्प, बोल और कर्म में सदा हज़ूर हाज़िर है इसलिए हज़ूर के आगे सदा मैं रूह भी हाज़िर हूँ। सदा इसी कम्बाइन्ड रूप में रहो।

20) मैं और मेरा बाबा, इसी स्मृति में कम्बाइन्ड रहो तो मायाजीत बन जायेंगे। करन-करावनहार - इस शब्द में बाप और बच्चे दोनों कम्बाइन्ड हैं। हाथ बच्चों का और काम बाप का। हाथ बढ़ाने का गोल्डन चांस बच्चों को ही मिलता है। लेकिन अनुभव होता है कि कराने वाला करा रहा है। निमित्त बनाए चला रहा है - यही आवाज सदा मन से निकलता है।

21) जितना-जितना याद में रहेंगे उतना अनुभव करेंगे कि मैं अकेला नहीं लेकिन बाप-दादा सदा साथ है। कोई भी समस्या सामने आये तो यही स्मृति में रहे कि मैं कम्बाइन्ड हूँ, तो घबरायेंगे नहीं। कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से कोई भी मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा। अपने सब बोझ बाप के ऊपर रख स्वयं हल्के हो जाओ तो सदा अपने को खुशनसीब अनुभव करेंगे और फरिश्ते के समान नाचते रहेंगे।

22) संगमयुग है ही कम्बाइन्ड रहने का युग। बाप से अकेले हो नहीं सकते। सदा के साथी हो। सदा बाप के साथ रहना अर्थात् सदा सन्तुष्ट रहना। बाप और आप सदा कम्बाइन्ड हो तो कम्बाइन्ड की शक्ति बहुत बड़ी है, एक कार्य के बजाए हजार कार्य कर सकते हो क्योंकि हजार भुजाओं वाला बाप आपके साथ है।

23) जैसे शरीर और आत्मा दोनों कम्बाइन्ड होकर कर्म कर रही है, आपका टाइटल ही है कर्मयोगी। कर्म करते याद में रहने वाले सदा न्यारे और प्यारे होंगे, हल्के होंगे। नॉलेजफुल के साथ-साथ पावरफुल स्टेज पर रहो। नॉलेजफुल और पावरफुल यह दोनों स्टेज कम्बाइन्ड हों तब स्थापना का कार्य तीव्रगति से होगा।

24) अगर चलते-चलते कभी असफलता या मुश्किल का अनुभव होता है तो उसका कारण सिर्फ खिदमतगार बन जाते हो। खुदाई खिदमतगार नहीं होते। खुदा को खिदमत से जुदा नहीं करो। जब नाम है खुदाई खिदमतगार। तो कम्बाइन्ड को अलग क्यों करते हो। सदा अपना यह नाम याद रखो तो सेवा में स्वत: ही खुदाई जादू भर जायेगा।

25) सेवा के क्षेत्र में जो भिन्न-भिन्न प्रकार के स्व प्रति वा सेवा के प्रति विघ्न आते हैं, उसका भी कारण सिर्फ यही होता है, जो स्वयं को सिर्फ सेवाधारी समझते हो लेकिन ईश्वरीय सेवाधारी हूँ, सिर्फ सर्विस पर नहीं लेकिन गॉडली सर्विस पर हूँ - इसी स्मृति से याद और सेवा स्वत: ही कम्बाइन्ड हो जाती है।

26) जैसे शिव-शक्ति कम्बाइन्ड रूप है ऐसे पाण्डवपति और पाण्डव यह सदा का कम्बाइन्ड रूप है। पाण्डवपति पाण्डवों के सिवाए कुछ नहीं कर सकते। जो ऐसे कम्बाइन्ड रूप में सदा रहते हैं उनके आगे बापदादा साकार में जैसे सब सम्बन्धों से सामने होते हैं। जहाँ बुलाओ वहाँ सेकण्ड में हाज़िर इसलिए कहते हैं हाज़िरा हज़ूर।

27) वरदाता बाप और हम वरदानी आत्मायें दोनों कम्बाइन्ड हैं। यह स्मृति सदा रहे तो पवित्रता की छत्रछाया स्वत: रहेगी क्योंकि जहां सर्वशक्तिमान बाप है वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी

नहीं आ सकती है। सदा बाप और आप युगल रूप में रहो, सिंगल नहीं। सिंगल हो जाते हो तो पवित्रता का सुहाग चला जाता है।

28) आपके शिव शक्ति के कम्बाइन्ड रूप का यादगार सदा पूजा जाता है। शक्ति शिव से अलग नहीं, शिव शक्ति से अलग नहीं। ऐसे कम्बाइन्ड रूप में रहो, इसी स्वरूप को ही सहजयोगी कहा जाता है। योग लगाने वाले नहीं लेकिन सदा कम्बाइन्ड अर्थात् साथ रहने वाले। जो वायदा है कि साथ रहेंगे, साथ जियेंगे, साथ चलेंगे..... यह वायदा पक्का याद रखो।

29) स्वयं को बाप के साथ कम्बाइन्ड समझने से विनाशी साथी बनाने का संकल्प समाप्त हो जायेगा क्योंकि सर्वशक्तिमान साथी है। जैसे सूर्य के आगे अंधकार ठहर नहीं सकता वैसे सर्वशक्तिमान के आगे माया का कोई भी व्यर्थ संकल्प भी ठहर नहीं सकता। कोई भी दुश्मन वार करने के पहले अकेला बनाता है, इसलिए कभी अकेले नहीं बनो।

30) ''आप और बाप'' - इस कम्बाइन्ड रूप का अनुभव करते, सदा शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वाणी, श्रेष्ठ दृष्टि, श्रेष्ठ कर्म द्वारा विश्व कल्याणकारी स्वरूप का अनुभव करो तो सेकण्ड में सर्व समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। सदा एक स्लोगान याद रखना - ''न समस्या बनेंगे न समस्या को देख डगमग होंगे, स्वयं भी समाधान स्वरूप रहेंगे और दूसरों को भी समाधान देंगे।'' यह स्मृति सफलता स्वरूप बना देगी।

(त्रिमूर्ति दादियों द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षायें)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

"फाइनल सब अचानक होना है इसलिए एवररेडी रहो तब अन्त मती सो गति अच्छी होगी" (गुल्जार दादी जी 14-11-09)

हमारा बाबा हम बच्चों को अभी दु:खी देख नहीं सकता है, हम लोग तो सुखी हो गये लेकिन दूसरे भी हमारे भाई बहन जो दु:खी, अशांत हैं, चिंता वा भय में हैं, कल क्या होगा इसी सोच में रहते हैं उन्हों को शान्ति का सहयोग दे करके उनको भी सुख शान्ति का अनुभव कराना है। अब खुद शक्तिशाली बन मन्सा द्वारा औरों को भी शक्ति देना है, यह हमारा मूल कार्य है, इसी कार्य में सभी को लगे रहना है। इस कार्य को करने में बिजी रहने से आप बहुत सहज मायाजीत बन सकते हैं क्योंकि माया पहले मन में संकल्प रूप में आती है फिर आगे बढ़ती है। तो अगर आपका मन ही सेवा में बिजी रहा तो माया के आने का रास्ता ही नहीं रहेगा इसलिए बाबा कहते मन्सा सेवा में रहने से एक तो हमारा मन बिजी रहता है। अन्तर्मुखी हो रहना माना अन्दर में रहना, बॉडीकॉन्सेस से परे रहना, जिससे माया नहीं आयेगी। दूसरा आस-पास में आपके शान्ति का वायुमण्डल का प्रभाव पड़ता है। तीसरा जो भी फाइनल होना है वो अचानक होना है तो हर घड़ी मेरे लिए अटेन्शन देने की है। अचानक होना है तो एवररेडी रहना होगा क्योंकि अन्त मति सो गति होनी है। तो अचानक, एवररेडी और बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। हर सेकेण्ड अटेन्शन दे करके टेन्शन में नहीं जायें तो उनका बहुतकाल इकट्ठा हो सकता है। अगर अलबेले होंगे तो वो टाइम कट हो जाता है। इस समय हम सबको बाबा का वरदान है कोई भी जो चाहे सो कर सकता है, जो करेगा सो पायेगा इसलिए कोई ऐसे नहीं कहे कि हमको तो चांस है ही नहीं या हम तो अभी आये हैं...। इसमें जो ओटे सो अर्जुन, कोई भी मौका ले सकते हैं और जितना चाहो उतना पुरुषार्थ करके आगे बढ़ सकते हैं।

फिर बाबा कहते यह निश्चय रखो कल्प पहले भी मैं ही तो थी, इस कल्प में भी मैं ही हूँ और दूसरे कल्प में भी होंगी। मैं थी, मैं हूँ और मैं होंगी इतना निश्चय और नशा रखना चाहिए। जहाँ निश्चय है वहाँ विजय अवश्य होती है। निश्चय की तो हमेशा विजय होती ही है, निश्चयबुद्धि विजयंति। तो हम सबको यह लक्ष्य रखना है कि मेरा बहुतकाल अभी है लेकिन अभी जो आये हैं तो पल पल परमात्मा के प्यार में खोया हुआ हो। जहाँ प्यार होता है वो भूलना मुश्किल है, याद करना मुश्किल नहीं होता है। इन बहनों की बहुत अच्छी लाइफ है, बहुत आनंदमय रहते हैं, ऐसे बहनों

द्वारा बाप के प्यार की आकर्षण में ही तो आप यहाँ आये हैं। तो परमात्म प्यार ऐसी चीज़ है जो आप परमात्मा को पसंद आ गये तब तो इन बहनों द्वारा अपना बना लिया। बाबा को हम पसंद आये और हमको बाबा पसंद आये। पसंद आ गया, प्यार हो गया फिर तो भूलने की बात ही नहीं। और कोई भी बात आवे जो आप नहीं समझ सकते हो, क्या करूँ कैसे करूँ की स्थिति आवे... तो सच्ची दिल से ''मेरा बाबा'' कहो तो बाबा हाजिर होके आपको ऐसी प्रेरणा देगा जो बिल्कुल ही सहज जैसे हुआ ही पड़ा है। असम्भव भी सम्भव हो जायेगा क्योंकि परमात्मा का हाथ हमारे सिर पर है। हमारी दिल सच्ची और साफ है तो बाबा हमारा है, हम बाबा के हैं और है ही क्या? सच्ची और साफ दिल वाले को कब, क्या करना है, कैसे करना है वो टच करता है।

समर्थ संकल्प है मुरली, वरदान, स्लोगन इसको कभी भी भूलो नहीं। रोज़ मुरली से मन को होमवर्क दे करके व्यर्थ को समर्थ में चेंज करने का पुरुषार्थ जरूर करना। इसके लिए मन का टाइमटेबल बनाना। कभी कभी शब्द मिटाके जाओ तो सदा के लिए तीव्र पुरुषार्थी बनेंगे। अभी मैं आत्मा बिन्दू, बाबा भी बिन्दू और जो कुछ हो जाता है उसको बिन्दू लगाना है, तो बिन्दू रूप में स्थित होके बैठना है। बस यही याद रखना कि हमें कभी कभी ऐसी स्थिति में नहीं रहना है, बाबा से सदा मिलन मनाना है, इसी रीति ऐसे अभ्यास से उड़ते रहेंगे और उड़ाते रहेंगे। ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"किसी की नेचर को याद करना व कराना यह भी पाप है, अपनी नेचर को नाज़ुक नहीं बनाओ" (15-09-06)

मुरली में ऐसा जादू भरा हुआ है, जो जादूगर की जादूगरी देखकर अजब लगता है। जादूगर क्या से क्या करते हैं, हम देखते ही रह जाते हैं। तो बाबा भी बहुत मशहूर जादूगर है। भक्ति में समझते थे कृष्ण जादूगर है, पर अनुभव कहता है शिवबाबा जादूगर है। जवानों को बुढ्ढा बना देता है, बुढ्ढों को जवान बना देता है, यह कमाल है बाबा की। साहूकारों को गरीब बना देता है, साहूकार सेवा में लगाने में बिचारे गरीब हैं, सोचते रहते हैं और गरीब को बाबा साहूकार बना देता है वो पूछता रहता है बाबा आपकी सेवा में मैं क्या करूँ! उसका यज्ञ सेवा के लिए प्यार बहुत, वो गरीब नहीं है। बाबा के लिए वो शाहों का शाह, तीनों लोकों का मालिक है। बाबा कहता है मैं भी तीनों लोकों का मालिक नहीं हूँ, मेरे बच्चे तीनों लोकों के मालिक हैं। चाहें यहाँ रहें, चाहे सूक्ष्म वतन में रहें। बाबा ने इतना हल्का बना दिया है।

बालक सो मालिक बनके रहने में मजा है। जो इनोसेन्ट बालक होते हैं उनसे खुशबू बहुत आती है। फूल की तरह खुशबूदार, ऐसे बालक जिसमें कोई भी विकार का अंशमात्र न हो। जैसे विकार का पता ही नहीं है, वो बड़े प्यारे लगते हैं। कोई हैं जो किसी भी जाति देश धर्म भाषा के हों लेकिन फूल प्यारा न लगता हो? फलों में है आम और फूलों में है गुलाब। बाबा फल भी प्रत्यक्ष फल देता है। जितना हम प्युअर बनते हैं उतना फूल मुआफिक बनते हैं, जितना खुश रहते हैं उतना फल बन जाते हैं। तो बाबा कैसा जादूगर है जो कांटे को फूल बना देता है।

बाबा कहते खुशी जैसी खुराक नहीं, चिन्ता जैसा मर्ज नहीं। एक-एक बोल लाखों की वैल्यू का है। माला भी हाथ में फेरने के लिए उठानी पड़ेगी। हमें तो केवल बाबा के बोल याद करने है बस, खुशी आ गयी। कौन सा बोल? बच्चे रिमेम्बर मी, जी बाबा। बच्चे, 63 जन्म विकर्म किये हैं, अब मुझे याद करो तो विनाश हो जायेंगे, जी बाबा। सबमें जी बाबा करना है। जो डिटैच होना नहीं जानता है वो लविंग कैसे होगा। जब तक अटैचमेन्ट है तब तक सुखी नहीं रह सकता है। लोहे की जंजीरें टूटी, सोने की जंजीरें अच्छी लगती हैं।

बाबा का कन्याओं से कितना प्यार है, कन्याओं को बाबा का नाम बाला करना है। अच्छी स्टडी करना है, अच्छा गुणवान बनना है। जो बाबा को अच्छा लगता है वो करना है। जहाँ बाबा बिठाता है, वहाँ बैठना है। उसमें आजकल परीक्षा और कोई नहीं है। कोई आवाज से बात करता है तो दूसरा ढीला पड़ जाता है। अरे कुछ नहीं है, ड्रामा बड़ा मीठा है, सीख रहे हैं। किसकी नेचर को न याद करो, न याद कराओ, यह भी पाप के खाते में

जायेगा। कर्म में नेचर को याद किया, हमारी भी नेचर ऐसी नाज़ुक बन गयी, तो विकर्म तो विनाश हुआ नहीं। भले समझता है मैं बुरा कर्म तो करता नहीं हूँ, पर नाज़ुक नेचर वाले में सहनशक्ति है नहीं तो श्रेष्ठ कर्म कर नहीं सकता। हमारी पढ़ाई है - पढ़ते जाओ, प्रैक्टिस करते जाओ, पास होते जाओ। न मेरे को किसी की कम्पलेन, न मेरी किसी को कम्पलेन, कम्पलीट बनना है।

मेरे बाबा की ब्यूटी इन आँखों से नहीं देखी जा सकती। बाबा हमको दर्शनीय-मूर्त बना रहे हैं, आर्टिस्ट भी ऐसा चित्र नहीं बना सकता है, बाबा हमको ऐसा बना रहा है। बीमार जैसी शक्ल करना माना तमोप्रधान आदत है। आदत को छोड़ो, सतोप्रधान बनने की जो लगन है, अग्नि है ही जलने के लिए, परवाना है मरने के लिए। जलना क्या है! बाबा को देखते ही फिदा हो जाना। ऐसे मरने वालों की यह महफिल है ना। कभी भी कोई बात शक्ल पर न आये, इसका ध्यान रहेगा तो ब्युटीफुल बन जायेंगे। अच्छा।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें - दूसरा क्लास

"पास्ट बातें ही भूत हैं, उन्हें याद करना माना परेशान होना"

(29-09-06)

संगमयुग जो इतना प्यारा लगता है, वह पूरा हो जायेगा तो हम क्या करेंगे? भले पता है कि बाबा के साथ जायेंगे, और सब आत्मायें मच्छरों सदृश्य जायेंगी। आत्मा उड़ती है ना, अगर अन्त में आत्मा मच्छरों सदृश्य जाये तो उस आत्मा की क्या वैल्यू है? मच्छर की क्या वैल्यू है। ऐसी आत्माओं का इस दुनिया में रहने से कोई फायदा नहीं है। लेकिन मैं आत्मा ऐसी न रहूँ, जो ऐसे ही चली जाऊं। मैं आत्मा बीमारियों को खत्म करने वाली हूँ, न कि बीमारी फैलाने वाली। भाग्य विधाता बाबा से जो हम आत्माओं को इतना भाग्य मिला है, हमारे भाग्य का सितारा तो चमक गया, अब उस चमकते हुए सितारे को देख हर एक अपने को जानें, बाबा को पहचानें और घर चलने के लिए तैयार हो जाएं। हमारी ऐसी चमक हो। बाबा ने कहा है - आप मरे मर गयी दुनिया, यह शरीर भी छी-छी है, शरीर से काम लेना है, इससे तंग नहीं होना है लेकिन मोह भी नहीं रखना है।

जो अपने आपको नहीं समझते हैं वो प्यार से अपने आपको नहीं सम्भाल सकते फिर दूसरे से खफ़ा हो जाते हैं। तकदीर बनाने वाले कभी खफ़ा नहीं होते हैं, थकते नहीं हैं। तकदीर ऊंची बनाने की बाबा ने हमें समझ दी है, साथ दिया है। टीचर स्कूल में कोई साथ नहीं देता है, वो अपनी ड्यूटी पालन करता है, बाबा हमको साथ देता है, मात-पिता के रूप में भी, सखा के रूप में भी कि हम होशियार हो जायें, अच्छा पढ़कर स्कॉलरशिप लेने के।

मम्मा ने स्कॉलरशिप ले ली ना। मम्मा किसी के चिन्तन में नहीं गयी। पर अपने जीवन के उदाहरण से, उठते-बैठते सिखाती रही। तो बड़ों को देख-देखकर जो सीख जाता है, उसे वरदान मिल जाता है। कई मिसाल हैं जो इतने भोले-भाले, मम्मा बाबा को देख ऐसा सीखे हैं, जो उनको पूछो तो कहते हैं बड़ों का वरदान है। जो बड़े बोलें, उसे दिल से स्वीकार करें तो कई कार्य सहज हो जाते हैं। मुझे सिर्फ हाँ जी कहके दिल से करना है। इससे जो दुआयें मिलती हैं वो दुआयें काम करती हैं, जो खुद नहीं करते हैं, दुआयें कराती हैं।

आप सब भी कहो हमको बड़ों की दुआयें हैं। हमको आगे बढ़ाने वाले, ऊंच उठाने वाले कौन हैं? सच्ची दिल से करने वाले को दुआयें मिलती हैं। ऊंची तकदीर बनाने वाले अपने को या बाप को ठगेंगे नहीं। दिखावा नहीं करेंगे। कईयों के अन्दर होगी मनमत और मुख से कहेंगे श्रीमत। अपनी कामना पूरी करने के लिए जो श्रीमत में अपनी मत मिक्स करता है वो अपने आपको ठगता है।

मीठा बाबा कहते हैं ज्ञानी तू आत्मा मुझे प्रिय है। निरन्तर योगी, सच्चा योगी, साक्षात बाप समान बनने की धुन में रहता है। संगम पर एक-एक मिनट जो बाबा कराता है, वही करना है। एक बाबा है करने वाला, दूसरा है कराने वाला, दोनों हमारे सामने, एक दो के साथ हाजिर हैं। करने वाला कभी नहीं कहता है कि मैं करता हूँ। कराने वाला कहता है मुझे कराना है तो इसे करना ही है। ऐसे हम भी पुराने कर्म बन्धन से मुक्त बन बाबा के साथ सेवा में हाजिर रहें। कोई भी पुराने स्वभाव संस्कार वश

हमारा कोई संकल्प, बोल, कर्म न हो। अगर मेरा कर्म श्रेष्ठ नहीं है, तो करनकरावनहार हमारी स्मृति में नहीं रहेगा। बाबा को कभी याद करें, कभी भूल जायें तो यह कोई लाइफ नहीं है। जो बाबा सुनाता है वो ही सिमरण करते, स्वरूप में लाते ऐसी स्मृति रहे, अपने से तो पास्ट भूल जाये औरों से भी भूल जाये।

कोई मरा हुआ है अगर उसको याद करो तो वो भूत हो जायेगा। तो पुरानी दुनिया जो खत्म हुई पड़ी है, उसको याद करना माना भूत। भूत जब प्रवेश होते हैं तो वो छोड़ते नहीं। बातों के भूत जब किसी में प्रवेश होते हैं तो उसकी शक्ल कैसी हो जाती है। इसलिए श्राध खिलाते हैं, आत्माओं का उद्धार हो जाये, शक्ति आ जाये।

सब देवियों के गुण मेरे में हो। मैं दुर्गा भी हूँ, शक्ति भी हूँ, शीतला भी हूँ। कोई गुण शक्ति की कमी न हो। बाबा सर्व सम्बन्धों से हमारे में शक्ति भरता है। कमजोर को भूत लगते हैं, शक्तिशाली तो उन्हें भगा देते हैं, भूत ही उनसे डर जाते हैं। मैं कौन हूँ? बाबा का यज्ञ है, यज्ञ सेवा है, मैं विघ्न-विनाशक रहूँ।

संगमयुग है पुरुषोत्तम युग। सतगुरु की दया दृष्टि, दुआ दृष्टि, कृपा दृष्टि हर बात से पार ले जाती है। टीचर शिक्षा देता है, सतगुरु पार ले जाता है। बाबा कहता है याद रखो एक ही मेरा बाप टीचर सतगुरु है। भले बाप अपना बनाता है, टीचर पढ़ाता है, फिर सतगुरु कृपा से अच्छी तरह पढ़ाता है। अच्छा हुआ ही पड़ा है, हो जायेगा। इतने अन्दर से सतगुरु के वरदानी बोल हैं जो अच्छा ही हुआ है, हो जायेगा। किसके अन्दर से यह आवाज निकलेगा, जो बाप टीचर सतगुरु तीनों को अन्दर ध्यान में रखते हैं, तीनों की जो पालना, पढ़ाई, प्राप्ति है, उसका रिगार्ड रखते हैं। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"बुद्धि को श्रीमत रूपी लॉक लगाने वाला ही लकी है" (1999)

1) हम सभी प्यारे बाबा का हर मानव मात्र को शुभ सन्देश, शुभ पैगाम पहुंचाने वाले पैगम्बर अथवा संदेशी हैं। पैगम्बर कौन होता है? इस वैराइटी झाड़ में देखेंगे तो जो भी अपना-अपना धर्म स्थापन करके पैगम्बर बने हैं, वह आत्मायें अपने-अपने समय पर अपने प्यारे बाप के घर से डायरेक्ट आने के कारण सतोगुणी हैं फिर पीछे चक्र में आते हैं लेकिन हम पैगम्बर उन सबसे निराले हैं। वे बाप के घर से मर्ज हुई आत्मायें आती हैं और हमें बाप सम्मुख में नालेज देकर पावन बना रहे हैं। बाप ने हमें सिर्फ नालेज नहीं दी लेकिन अपना बनाकर अधिकारी बनाया है, वर्सा दिया है। उन पैगम्बरों को तो कहा आप अपना-अपना पिल्लर खड़ा करो और हमें पैगम्बर बनाया कि तुम्हें सारे विश्व का नव निर्माण करना है। पुराने को खत्म कर नया करना है। सारी विश्व की आत्माओं को मुझ बाप का पैगाम देना है।

2) बाबा ने हम बच्चों को इस बेहद झाड़ की जड़ में राजयोगी बनाकर बिठाया है – नव निर्माण के लिए। याद की शक्ति का, पवित्रता की शक्ति का जल डालना है। हमें सारे नव निर्माण की नींव पर रखा है। जब कोई मकान बनाते तो उसका पहला आधार नींव पर रहता है। जितना फाउन्डेशन पक्का होगा उतना इमारत का प्लैन रखेंगे। वह पैगम्बर कोई मकान के फाउन्डेशन नहीं, वह तो मरम्मत करने वाले हैं। लेकिन हमें तो नई दुनिया के नव निर्माण के लिए फाउन्डेशन में बाबा ने अन्दर रखा है। हमारा बाबा है फाउन्डर, उसने हमें फाउन्डेशन में रखा है और कहा इसमें योग का बीज डालो, पवित्रता का बीज डालो और इस ज्ञान की शक्ति से इस इमारत को मजबूत करो।

3) एक तरफ हम नींव हैं दूसरे तरफ हमें बाबा का पैगाम देना है कि बाप आया है – नव निर्माण करने। हमें बाबा ने सन्देशी बनाया है कि चारों तरफ मेरा सन्देश दो। एक तरफ हम राजयोगी, पवित्रता का दान देने वाले योगी बच्चे हैं, हमारा योग ही सहयोग है। पवित्रता ही हमारा सहयोग है। यही हम बाप को नव निर्माण के लिए सहयोग देते हैं। हम नव निर्माण के आधार हैं। हमारे आधार पर ही सृष्टि का उद्धार होना है। दूसरा हम पैगम्बर हैं।

4) वह पैगम्बर आते हैं अपना धर्म स्थापन करने और हम कल्प के आदि में आये अभी फिर जा रहे हैं। अभी हम ऐसी नींव डाल रहे हैं जो 21 जन्म तक हमारा मकान सदा सजा सजाया रहे। तो हरेक ऐसी अपनी जवाबदारी समझते हो कि हम इस जड़ में बैठे हैं। अपनी कूट-कूट कर नींव पक्की कर रहे हैं?

हमारा फाउन्डेशन है बुद्धियोग, नींव है याद की यात्रा। अगर हम नींव डालने वालों की बुद्धि भटकती है तो मकान का क्या होगा! अगर नींव डालने वाले, नींव डालते-डालते इधर-उधर चले जायें तो उस नींव का क्या होगा! हम सभी नींव में हैं, कहते भी हैं बाबा हम आपके हैं। हमें तो सर्विस की बहुत धुन है। लेकिन बुद्धि को बाहर भटकाते, तो वह नींव हिलेगी या मजबूत होगी? अगर नींव में बैठे-बैठे निकल जाते तो उसके लिए बाबा कहता - तुम्हें 100 गुणा दण्ड मिलेगा। अगर आज कोई कान्ट्रेक्टर लिखा पढ़ी करके कान्ट्रेक्ट ले और पीछे धोखा दे तो उस पर केस चल जाता। आप ने भी बाबा के लेज़र में नाम लिखाया, फार्म भरा अब कहो मैंने तो यह सोचा ही नहीं था कि फार्म भरा माना फंस गये। सोच कर फंसे ना! अच्छाई के लिए फंसे ना! बाप के प्यार में फंस गये। ठेका ले लिया ना! अब निकलेंगे भी तो कहाँ जायेंगे। हट्टी तो एक ही है। भागे तो भागे कहाँ। कोई रास्ता नहीं, लॉक लग गया है। जिसको लॉक लगा वही लकी है हम बाबा की लॉक के अन्दर हैं माना श्रीमत के अन्दर हैं, हमारा लॉक है श्रीमत।

5) बाबा ने हमें पैगम्बर बनाया है, परन्तु पैगम्बर कभी-कभी कहते मेरा माइन्ड डिस्टर्ब है। हूँ मैं निर्माण करने वाला लेकिन खुद का निर्माण करना मुझे नहीं आता। तो हम समझें कि हम दूसरों के लिए पंडित हैं। स्व से सृष्टि का निर्माण होगा या सृष्टि से स्व का? तो हरेक चेक करो कि मैं स्व का निर्माण कर रहा हूँ? क्या निर्माण करने वाला कभी बिगड़ेगा? अगर मैं बिगड़ गई तो क्या मैं बिगड़ी को बनाने वाली हुई या बनी हुई को बिगाड़ने वाली? उस टाइम मैं पैगम्बर कौन सा संदेश सबको देती? बिगड़ने का या निर्माण करने का? कईयों का मूड एकरस से निकल कर आफ हो जाता। यह कितनी अच्छी बात है। उस समय हमारी सूरत से कौन सा पैगाम मिलता है? नव निर्माण का? कई कहते मेरे में देह-अभिमान बहुत है। पर बाबा तो जानता है ना कि हैं ही सब देह-अभिमानी। मैं इन गिरी हुई आत्माओं को ही देही-अभिमानी बनाने आया हूँ। फिर बाबा को क्यों कहते – मेरे में देह-अभिमान है! अगर सर्जन को कोई पेशेन्ट कहे हे सर्जन मेरी तो वही बीमारी है, तो यह भी उसकी इनडायरेक्ट इनसल्ट हुई ना। अगर कहते मेरे में वही का वही देह-अभिमान है तो बाबा का मैने कितना रिस्पेक्ट किया! यही पढ़ाई की रिजल्ट सुनाई? बाबा ने पढ़ाया देही-अभिमानी बनो, हम जवाब देते हमारे में देह-अभिमान है। तो क्या यही प्यार का जवाब है? अगर अभी तक मेरे में वही देह-अभिमान है तो शूद्र कुमार और ब्रह्माकुमार में अन्तर ही क्या रहा? फिर कहेंगे आप जो भी समझों। तो मैं समझूँ तू राजयोगी नहीं हो ना!

6) कहते हैं बाबा मुझे और कुछ नहीं चाहिए सिर्फ मुझे सभी प्यार से चलायें। मैं पूछती बाबा प्यार का सागर है, क्या वो प्यार नहीं दे रहा है, उनसे ज्यादा और कोई प्यार देने वाला है? चलाने वाला बाबा या हम तुम? प्यार का सागर हमें प्यार से पाल रहा है। हमें नया जन्म दिया, वर्सा दे रहा है, हम उसकी पालना के अन्दर हैं, वह हमें अति प्यार से इस पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ले चलता। कितनी बार कहता ओ मेरे मीठे मीठे बच्चे, यह कितने प्यार के बोल हैं। बाबा ने यह बोल सबके लिए बोला है या एक दो के लिए? तुम किसको बोलते कि हमें प्यार से चलाओ? किसको अक्ल सिखाते हो?

7) बाबा ने हमें मत्र दे दिया - जो देखते हो वह न देखो, जो न दिखाई देता है उसे याद करो। भिन्न-भिन्न संस्कार तो कर्मों का हिसाब-किताब है। मुझे कर्म का खाता चुक्तू करना है ना कि बनाना है। मैं सब हिसाब-किताब चुक्तू करने, कर्मातीत बनने के लिए बैठी हूँ फिर मैं अपना हिसाब-किताब संस्कारों के वश क्यों बनाऊं!

8) अगर हम हर घड़ी यही समझें कि हम स्टेज पर हैं, अगर कोई स्टेज पर बैठ मूड आफ करे, रोता रहे तो वह सबको अच्छा लगेगा? उस समय मुझे सबसे प्यार मिलेगा? स्टेज पर बैठ कर रोओ तो सब देखें कि मैं बी.के. कितना दुखी हूँ, मैं कितना उदास हूँ, जब गुस्सा आता है तो स्टेज पर जाकर गुस्सा करो, सब देखें मेरा चेहरा कैसा है। मैं सुन्दर हूँ या काला हूँ! हूँ तो मैं पैगम्बर लेकिन क्रोध वाला हूँ। रोने वाला हूँ। शायद यह गुस्सा भी मेरी सर्विस करे? फिर देखने वाले कहते - इनका यही प्रैक्टिकल का ज्ञान है! कहते हैं मेरी वृत्ति दृष्टि खराब होती है, मैं कहती तू खराब हो। बाबा हमें काले से गोरा बनाता फिर कहते दृष्टि खराब होती। खराब रावण है या राम? राम का होकर रहो। अगर सीता कहे मेरी तो वृत्ति खराब हो जाती तो राम पसन्द करेगा? राम के बच्चे होकर मेरी खराब वृत्ति जाती। लज्जा नहीं आती? फिर कहते क्या करें, संग ऐसा है तो जरूर रावण का संग है, बाप का तो नहीं है। हम अन्धों को बाबा ने लाठी दी, तीसरा नेत्र दिया। अब हम पुराने नहीं, हमारा पुराना जन्म खत्म हुआ, जब हमारा नया जन्म, हम नयी स्थापना में हैं फिर क्यों कहते हमारा तो पुराना संस्कार है। हमेशा समझो हम नयी स्थापना करने वाले, नये अधिकारी हैं, नया राज्य लेने वाले हैं। जब न्यू बर्थ हो गया तो पुराना हिसाब-किताब समाप्त हुआ। ज्ञान कहता है सब बातों से प्रूफ हो जाओ। गुस्सा, उदासी, गन्दी वृत्ति सबसे प्रूफ। जब प्रूफ होगें तो बाबा को प्रूफ दे सकेंगे। बाबा के सपूत बच्चे कहलायेंगे।